MAHAMUL03014/13/1/2012-TC
Volume 2 - Special Issue - 2 - Jan - 2014

Online : 2320-8341
ISSN : 2320-6446

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

Special Issue - 2

"स्वावलंबी शिक्षा यही हमारा ब्रीद" - कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था का,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

ता.माण.,जि.सातारा

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा

सातारा जिला हिंदी अध्यापक मंडल, सातारा

के संयुक्त तत्त्वावधान

में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

* विषय *

"२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य"

दि. ६ (सोमवार) एवं ७ (मंगलवार) अक्तूबर, २०१४

प्रकाशक

प्राचार्य, डॉ.चंद्रकांत खिलारे

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

संपादक

प्रा.डॉ.बाळासाहेब बलवंत

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभागाध्यक्ष,दहिवडी कॉलेज दहिवडी

सह-संपादक

प्रा.सोमनाथ कोळी

सहयोगी प्राध्यापक

* आयोजक *

हिंदी विभाग, दहिवडी कॉलेज दहिवडी

21	21 वीं सदी के गजलों में व्यंग्य	प्रा. सुश्री. जयश्री पाटील	86 – 92
22	सुरजपाल चौहान के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. सुभाष राठोड	93 – 96
23	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. सचिन जाधव	97 – 99
24	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. एस.के. खोत	100 – 102
25	चंद्रसेन विराट के 'चुटकी चुटकी चाँदणी' दोहा संग्रह में व्यंग्य	प्रा. झेड.बी. मुलाणी	103 – 106
26	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मारूफ मुजावर	107 – 115
27	व्यंग्य कवी डॉ. जर्रा काझी के कविताआं में व्यंग्य	प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा	116 – 123
28	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मोहसीन बागवान	124 – 134
29	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा.डॉ. भारत खिलारे	135 – 140
30	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा. दत्तात्रय साळवे	141 – 144
31	स्नेहा ठाकूर के 'प्रथम डेट' कहानी में व्यंग्य	प्रा. सुनिल गायकवाड	145 – 146
32	सूर्यबाला की कहानी में चित्रित व्यंग्य	सुश्री. लक्ष्मी मनशेट्टी	147 – 150
33	21 वीं सदी के कहानी में सांस्कृतिक व्यंग्य	प्रा.डॉ. राजेंद्र भोसले	151 – 152
34	सूदर्शन प्रियदर्शन की कहानी 'अखबारवाला' में चित्रित व्यंग्य	डॉ. संजय चिंदगे	153 – 156
35	हरिशंकर परसाई के लघुकथाओं में व्यंग्य	डॉ. सुमित्रा पोवार / डॉ. बाबासाहेब पोवार	157 – 160
36	21 वीं सदी के निबंधों में व्यंग्य	डॉ. विनायक कुरणे	161 – 163
37	राम अवतार यादव के कहानियों में व्यंग्य	गणेश खवळे	164 – 166
38	व्यंग्य रचनाकार डॉ. सूर्यबाला	डॉ. बालासाहेब बलवंत	167 – 168
39	व्यंग्यकार माधव सोनटक्के	डॉ. विनायक शिंदे / श्री. अनंत वडघणे	169 – 172
40	ज्ञान चतुर्वेदी के 'खामोश! नंगे हमाम में है' में व्यंग्य	डॉ. संजय जाधव	173 – 176
41	'नावक के तीर' में व्यंग्य	डॉ. नितीन धवडे	177 – 180
42	सूर्यबाला के 'देशसेवा के अखाडे में' चित्रित व्यंग्य	डॉ. दत्तात्रय अनारसे	181 – 184
43	किसान अत्महत्या नामक यात्रानुमा	प्रा. डॉ. बी.एम. माने	185 – 190

२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य (प्रथम दशक)
व्यंग्यकार माधव सोनटक्के

अनंत वडघणे

डॉ.विनायक शिंदे

आधुनिक हिंदी गद्य विधाओं में व्यंग्य एक विधा के रुप में उभरकर सामने आ रहा है। उसके पहले लेखक, कवि जो थे, वे अपने रचनाओं में शैली के तौर पर व्यंग्य का उपयोग करते थे। जिसका आधार सामाजिक विसंगति और विंडम्बना का चित्रण करना था। किन्तु वर्तमान समय में कुछ ऐसे विशिष्ट नाम सामने आ रहे हैं जिन्होंने व्यंग्य को ही प्रधानता दी। हिंदी साहित्य इतिहास के दर्पान में झांककर देखे तो व्यंग्य की एक सुर्दुर परंपरा दिखाई देती है। रीतिकालीन कवि बिहारी ने भी राजा जयसिंह को राजकाज की ओर दुर्लक्षित करने पर एक व्यंग्यात्मक दोहा लिखकर वास्तविक स्थिति से अवगत कराया था। आधुनिक काल के अन्तर्गत भारतेन्दु जी ने 'भारत दर्दशा' तथा 'अंधेर नगरी' जैसे नाटकों के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता पर व्यंग्य किया। निराला, धूमिल की कविता भी सामाजिक तथा राजनैतिकता के विरुध्द व्यंग्य कसती है। उसी तरह साहित्य के विभिन्न विधाओं के माध्यम से व्यंग्य का प्रचलन हो रहा है। हरिशंकर परसाई के आलावा शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी और श्रीलाल शुक्ल जैसे नाम सामने आ गये जिन्होंने व्यंग्य करे स्वयं की पहचान दी। वैसे तो व्यंग्य साहित्य के विभिन्न विधा में दिखाई देता है। जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध तथा संपादकीय जैसे कई क्षेत्रों में वर्तमान स्थितियों पर व्यंग्यात्मक रुप में लिखा जाता है।

व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार सामाजिक विकृति से समाज का साक्षात्कार कराता है। व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए हिंदी के मुर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई कहते है–''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियॉ, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दापाश करता है।"[२] डॉ.माधव सोनटक्के भी ऐसे ही व्यंग्यकार है। जिनके संपादकीय का आत्मा व्यंग्य रहा है। इन्होंने 'संचारिका' पत्रिका के संपादकीयता के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक तथा अन्य विभिन्न विषयों पर व्यंग्य लिखे ओर प्रचलित विसंगति का पर्दा पाश किया। उन्होंने 'ओसामा अपने–अपने', 'ओम जूताय नमः', 'घोटाला चिन्तन', 'बेचारे सांसद', 'एक और प्रेत का बयान', 'व्यावहारिक शोध प्रविधि एवं शोधतंत्र', 'हमारी

आध्यात्मिक सम्पन्नता', 'आम, आम आदमी और बाजार', ओम गुण्डा पुरुष देवाय नमः!', 'किराणा की होलसेल राजनीति', सच का सामना जैसे कई विषयों को लेकर वर्तमान समय में पल रही विसंगत व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। जिसमें बडे सहजता से तथा हास्य–व्यंग्यात्मक रुप से, सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक व्यवस्था के विकृत रुप को अभिव्यक्ति दी है। उनके व्यंग्य बडे ही रोचक तथा सामाजिक बिगडते मानवीय मूल्यों पर तमाचा लगाते है। उनके हर एक संपादकीय में व्यंग्य ओतप्रोत भरा है। जो वर्तमान सामाजिक स्थितियों से रु–ब–रु कराता है। 'सच का सामना' इस संपादकीय में इन्होंने टी.वी. पर दिखाएँ जानेवाले 'सच का सामना' कार्यक्रम पर है। जिसमें नारी खुले मंच पर अपने परिवार के सम्मुख अपनी निजी अतित को किस प्रकार प्रकट कर रही है। जिसमें शर्म नाम की कोई चिज नहीं है। यथा–"लेकिन हम दाद देते हैं उन देवियों के साहस की, जो पति और ढेर सारे रिश्तेदारों के सामने स्वीकार करती है कि गैर मर्दों से उनके जिस्मानी रिश्ते रहे हैं।"[२] इस प्रकार सच के नाम पर सामाजिक विकृति की ओर समाज किस तरह अग्रेसित हो रहा है। तो दूसरी ओर कुछ चैनल अपना टी.आर.पी. बडा रहे हैं। जिने भारतीय संस्कृति, मानवीयमूल्य से कोई लेना देना नहीं, उन्हें तो सिर्फ पैसे बटौरने की पडी है। तो दूसरी ओर इसी सच्चाई के नाम से नारी किस तरह अपने निजी जीवन के अनुभव को सबके सामने सैर करती है। इसी को इन्होंने अपने व्यंग्य का आधार बनाया है।

वर्तमान समय भ्रष्टाचार को लेकर सभी ओर बोलबाला हो रहा है। हर कोई उसके विरोध में बोलता है किन्तु उससे निपटने के लिए कुछ प्रयास नहीं हो रहे हैं। ऐसे विकट समस्या पर'घोटाला चिन्तन' इस व्यंग्य में इन्होंने इसकी आलोचना की है। वे कहते हैं–घोटाला उन्हें जन्मघुट्टी में ही मिल रहा है, होश संभालते ही उसका साक्षात्कार घर के घोटालों से होता रहा है. बाजारीकरण के परिवेश में माता–पिता के छोटे–बडे घोटालों से उसकी प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हो रही है. फिर क्रमशः स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में अध्यापकों, प्राध्यापकों, कुलपतियों, प्रबन्धकों, परीक्षकों आदि घोटालों से गुजरते हुए घोटालों में स्नातक–स्नोतकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त हो रही हैं, और आगे वे डाक्टर, इंजिनिअर, वकील, जज, अधिकारी, प्राध्यापक, उद्योगपति अपने ज्ञान के सहारे घोटालों को चरम स्थिति तक पहुँचाने में अपना योगदान देने में समर्थ हो रहे हैं. आज संपूर्ण देश की संस्थाएँ इस पवित्र कार्य में संलग्न हैं, कहना होगा कि घोटालों का भविष्य सुनहला है।"३ इस तरह प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च से उच्चे स्तर तक किस

प्रकार भ्रष्टाचार का साम्राज्य पहुँच गया है और उसकी जड़े भी इतनी ही गहराई में पहुँच गई है। इससे व्यंग्यकार को देश का भविष्य खतरे में दिखाई देता है। जिसमें सामान्य से सामान्य अफसरशाही भी इस भ्रष्ट व्यवस्था में मौजूद है किन्तु उसके विरुध्द कुछ भी निर्णय देने में यहां की न्यायव्यवस्था असमर्थ है। तो दूसरी ओर देश की जनता अंधे के भांति उनका ही जय–जयकार करती है। और उन्हें ही चुनकर अपना नेता बनाती है। ऐसी व्यवस्था पर व्यंग्य कसते हुए । डॉ.माधव सोनटक्के अपने संपादकीय व्यंग्य 'ओसामा अपने–अपने' में लिखते है–"छोटे–बडे घोटालों में लिप्त नेताओं–अफसरों की लम्बी सुची सी.बी.आई. के पास है. और इससे भी बडी सूची बाबा और अन्ना के पास के पास है. बाबा–अन्ना का अनशन सफल हुआ और ये सभी नेता–अफसर जेल पहुँच गये तो पूरे हिंदुस्तान को जेल में तब्दील करना पडेगा. लगभग हर बडा नेता–मंत्री और अफसर जेल में होगा. जेल से ही वे चुनाव लडेंगे और जेल में ही मंत्री पद की शपथ लेंगे...जेल विधान–भवन बन जायगी. शीत कालीन, ग्रीष्म कालीन और बजट सत्र सभी जेलों में होंगे. देश का कारोबार जेलों से चलने लगेगा. जेले देश की भाग्यविधाता बन जाएंगी. शुक्र है हमारे देश के कानून और न्याय–व्यवस्था श्रध्दा और सबूरी में आस्था रखती है।"[4] इस तरह देश के राजनेता, अफसर तथा न्यायव्यवस्था के वास्तविक रुप पर वे प्रहार करते हैं। तथा जनता को इस व्यवस्था से वाकिब कराकर हम देश को किन लोगों के हाथों में सौप रहे हैं। इसे व्यंग्य के माध्यम से समझाते हैं।

व्यंग्यकार समाज का आलोचक होता है। वह अपने व्यंग्य के द्वारा बडे सहजता से अपनी बात रखता है। जिसमें जनसामान्यगण सहजता से वह बात समझता है। डॉ. माधव सोनटक्के के व्यंग्यों में वह शक्ति मौजूद है। इनके हर व्यंग्य बडे हास्यात्मक लहजे में पाठक के मस्तिक तक पहुँच जाते हैं। 'आम,आम आदमी और बाजार' में वर्तमान बाजारीकरण, विज्ञान के नये–नये अविष्कारों के तहत हर वस्तू कैसे स्वादहीन शुर्ष्क बन गई है। तथा हर चिज बाजारु में तब्दील हो रही है। इस पर व्यंग्य किया है–"हर चीज बदल गयी है, अपना असली गुण, रुप, स्वाद सब कुछ खो चुकी है....नये–नये केमिकल....सब कुछ जल्दी–जल्दी, मौसम का इंतजार कौन करे!...इसलिए हर फसल, साग, सब्जी, फल कुछ ही दिनों में तैयार होकर बाजार की शोभा बडा रहे हैं:-हॉ, शोभा ही बढा रहे हैं, क्योंकि अब शोभा का ही बाजार है, बाजार ही शोभा है, बाजार ही जीवन का लक्ष्य है, क्रय–विक्रय सत्य है बाकी सब मिथ्या है, निरर्थक है।"[5] और इसी बाजारवाद के कारण शिक्षा का स्तर भी दिन–ब–दिन खस्ता हो रहा. है। स्कूल, कॉलेज,

विश्वविद्यालय ज्ञान के भण्डार कहें जाते थे किन्तु आज वे एक पैसे कमाने का जरीया बन गये है। जिसमें पढ़ानेवाले अध्यापक भी ज्ञानदान करने के लिए नहीं, बल्कि पैसा कमाने के हेतु कार्य कर रहे है। इसलिए यहां के महाविद्यालय में होनेवाला अनुसंधान कार्य भी घटिया किस्म का हो रहा है। इसी को लेकर डॉ. माधव सोनटक्के जी ने 'व्यावहारिक शोध प्रविधि एवं शोधतंत्र' के अंतर्गत अनुसंधान कार्य के नाम पर शोध–छात्र को किस तरह पापड बेलने पड़ते, किस तरह की पीएच.डी. की उपाधियाँ दी जाती है। इस बात को लेकर व्यंग्य करते है–"शोध साधना का पहला चरण है गुरु का प्रसाद होती है, इसीलिए जी जान से शोध–निर्देशक–मार्गदर्शक की तन,मन,धन से सेवा कीजिए...बाजार से अपने पैसे से सब्जी खरीदने से लेकर बड़े–बड़े राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमीनारों के लिए उन्हें शोध–निबंधों के साथ ही आवागमन और आवास गमन का प्रबंध करवा दीजिए, गुरु प्रसन्न होंगे और आपको आपका इच्छित फल प्राप्त होगा, जो कन्याएँ पीएच.डी. कांक्षिणी है वे तन–मन से गुरु के प्रति सम्पूर्ण समर्पित हो जाएँ।"[६] इस तरह शोध कार्य के नाम पर जो अनाचार बढ़ रहा है, उसको भी वे नजर अंदाज नहीं करते। बल्कि ऐसे व्यवस्था का बिमोड़ करने की आवश्यकता मानते है।

आज धार्मिक पाखण्ड का बोलबाला सभी ओर दिखाई देता है। एक समय था जब अनपढ़, गाँव में रहनेवाले लोग ही अधिक कर्मकांडों के शिकार हुआ करते थे किन्तु आज शहरों में वास्तव करनेवाले, पढ़े लिखे लोग भी भोदू बाबा के शिकंजे में फँसे हुए दिखाई देते है। आज इन बाबा लोगों का बोलबाला इतना हुआ है कि इन्हें रिश्वत दिये बगैर आपको देवता प्रसन्न नहीं होगी। इस व्यवस्था पर माधव सोनटक्के जी ने व्यंग्य कसा है। यथा–"भगवान अब किसी स्वर्ग लोक में निवास नहीं करते अपितु वे बड़े–बड़े मंदिरो–मठों में अपने अतिप्रिय साधकों, भक्तों की सेवा में आराम फरमा रहे होते है. अब वे सीधे हम लोगों को मिलते नहीं है, बापू, बाबा, माता, श्री–श्री आदि एजेंटों के जरिये कृपा प्रसाद प्रदान करते हैं. उनके प्रवचनों–वचनों में हमें आशीर्वाद प्रदान करते हैं।"[७]

इस तरह माधव सोनटक्के जी के व्यंग्य में समाज के विभिन्न कुप्रथाओं, कुरूढ़ियों का पर्दापाश करते है। उनके केवल समाजिक ही नहीं बल्कि राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न विषयोओं को अपने अंदर समेटते है।